वैश्वीकरण का समाज पर प्रभाव

डॉ. महेन्द्रसिंह – एसोसिएट प्रोफेसर एवं समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष,
माधव विश्वविद्यालय, पिण्डवाड़ा.
E-Mail : mahendrasinghparmar123@gmail.com

सारांश –

वैश्वीकरण आज एक वैश्विक प्रघटना तथा बहस के लिए एक वैश्विक मुद्दा है भले ही यह कोई घटना या प्रक्रिया न हो, लेकिन यह वास्तव में कोई पुरानी घटना नहीं है। दूनिया के लोगो ने न तो कभी वैश्वीकरण की अवधारणा का इस्तेमाल किया था और न ही कभी इसके बारे में सुना था। पिछली शताब्दी में 80 के दशक से यह अवधारणा प्रचलन में आयी और इसने विश्व समुदाय का ध्यान अपनी और आकर्षित किया।

वैश्वीकरण वास्तव में पूंजी, श्रम, प्रौद्योगिकी वस्तुओं ओर ज्ञान का राष्ट्रीय सीमाओं के आर पार निर्बाध संचरण हैं यह आर्थिक संवृद्धि के उद्देश्य से दुनिया के देशों और व्यक्तियों के मध्य एकीकरण अन्तक्रिया की प्रक्रिया है वैश्वीकरण की प्रक्रिया को उच्च क्षमता वाली संचार प्रौद्योगिकी जैसे कम्प्यूटर, टेलीफोन, मोबाईल तथा इण्टरनेट ने सुगम बनाया है सही रूप में देखा जाए तो यह अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की एक प्रक्रिया है जिसमें सीमा सम्बन्धी बहुत सारी औपचारिकताए और आपत्तियां नही होती है।

वैश्वीकरण का विकास –

एक विश्वव्यापी व्यापार विद्या के रूप में वैश्वीकरण यद्यपि एक नवीन अधिगम है किन्तु इसकी जडें द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पांच दशकों में निहित है। 20वीं सदी के समापन के दौर मे उदारीकरण व निजीकरण पर विशेष बल देते हुए वैश्वीकरण का उद्घोष किया वैश्वीकरण को समाज में व्यापक रूप से लाने वाले तीन संकुल है– व्यापार की खोज, बहुराष्ट्रीय विनिवेश, प्रौद्योगिकी। इन व्यवस्थाओं के कारण आज समाज वैश्विक स्तर पर बहुआयामी हो गया है। आज व्यक्ति के विचार वैश्विक बना गए है तथा उसकी सोच में लगातार परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है। आज इन्टरनेट के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व की जानकारी बडी आसानी से प्राप्त हो रही है। आज किसी भी विकास योजना का निर्माण विश्व स्तर पर किया जा रहा है। वैश्वीकरण ने वैश्विक दूरिया कम कर दी है तथा सम्पूर्ण विश्व को एक मंच पर लाकर खडा कर दिया है।

वैश्वीकरण का समाज पर प्रभाव –

विश्व के सामाजिक व आर्थिक रंगमंच पर वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने विश्व के आर्थिक विकास की कायापलट कर दी है। भारत मे वैश्वीकरण का प्रारम्भ वर्ष 1991 में हुआ था। यह नए आर्थिक युग का सुत्रपात था इस नई अर्थव्यवस्था में संघीय बाजार अर्थव्यवस्था का उदय हुआ। इसमें राज्यों को भी यह अधिकार मिल गया था कि केन्द्रीय योजना अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत व अपनी वित्तीय स्थिति में परिवर्तन कर सकें।

- वैश्वीकरण ने भारत की राष्ट्रीय और प्रतिव्यक्ति आय मे वृद्धि की है।
- आर्थिक विकास के लिए विदेशी पूंजी निवेश से घरेलु पूंजी निवेश को बढाने मे काफी मदद मिली है। इससे घरेलु उद्योग को ही नहीं बल्कि उपभोक्ताओं को उन्नत व तकनीकी, प्रबन्ध कुशलता मानव व प्राकृतिक संसाधनों का पूरा उपयोग, भारतीय उद्योगों को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अवसर प्रदान किया गया है।
- वैश्वीकरण का लाभ कृषि क्षेत्र में नवीन तकनीकों के द्वारा खाद्यानों का रिकॉर्ड उत्पादन हो रहा है और देश इस मामले में आत्मनिर्भर हो गया है।
- समाज में कुछेक उपेशित वर्गो को लांछित जीवन जीना पड रहा था उन्हें वैश्वीकरण के बाद उनकी स्थिति में परिवर्तन आया है और उन्हे विकास के समूचित अवसर प्रदान हो रहे है।

- वैश्वीकरण के कारण आज देश परिवहन एवं संचार साधनों में आत्मनिर्भर हो रहा है। विकासशील देशों में आज भारत के पास सबसे बडा जहाजी बेडा है। संचार साधनों में भारत का डाक नेटवर्क सबसे बडा नेटवर्क है।
- वैश्वीकरण के फलस्वरूप राष्ट्रीय एवं प्रति व्यक्ति आय में सुधार हुआ है। उद्योग–धन्धों के साथ साथ कृषि उत्पादन मे भी वृद्धि हुई है। परिणाम स्वरूप देश में निर्धनता के अनुपात मे गिरावट आ रही है।
- तकनीकी शिक्षा मे वैश्वीकरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पडा है। परिवहन व संचार साधनों ने वैश्विक दूरिया कम कर दी है। आज तकनीकी शिक्षा मे सुधार हो रहे है वे सम्पूर्ण विश्व में दृष्टिगोचर हो रहे है।
- वैश्वीकरण के इस दौर मे आज महिला अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गई है। आज महिलाओं ने अपने विकास के लिए विभिन्न समितियों का निर्माण कर लिया है। आज महिलाएं पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर साथ साथ काम कर रही है।
- वैश्वीकरण ने वर्गो के रूप में भी परिवर्तन कर दिया है। 20वीं सदी में जहॉ प्रमुख तीन वर्ग थे, उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग लेकिन आज वर्गो की संख्या बहुत अधिक हो गई जैसे – कृषक वर्ग, मजदूर वर्ग, शिक्षक वर्ग आदि आय के आधार पर नए वर्गो का निर्माण हो रहा है।
- आर्थिक वैश्वीकरण के कारण विश्व मे एक सामाजिक और आर्थिक क्रान्ति आयी है। आज व्यक्ति विश्व स्तर पर बाजार व्यवस्था को विकसित कर रहा है तथा ऑनलाईन शॉपींग से सारे प्रोटक्ट अपने घर मंगवा रहा है।
- वैश्वीय संस्कृति सामान्यतया पश्चिमी संस्कृति है आधुनिकीकरण ने विश्व भर की संस्कृतियों को मिश्रित करने का प्रयास किया फिर भी इस मिश्रण मे पश्चिमी ओर अमेरिकन संस्कृतियों की प्रधानता होती है।

वैश्वीकरण की प्रकृति सजातीयता या एकरूपता करने की है। विश्व भर के लोग विभिन्नता के होते हुए भी एक जैसे सांचे में ढल जाते है। और विभिन्नता का समावेश कर लेती है।

वैश्वीकरण ने विश्वभर मे उपभोग करने की बनावटी आवश्यकता को पैदा किया है और इस कारण आज नए समाज का उद्‌गम हो रहा है। वह वस्तुतः उपभोग समाज है इस समाज मे धीरे धीरे एक लोकप्रिय संस्कृति पनप रही है। यह संस्कृति नई जन संस्कृति के रूप मे सम्पूर्ण समाज मे सजातीयता ला रही है इसी संस्कृति ने अन्तर्राष्ट्रीय आरे घरेलु पर्यटन को बढावा दिया है।

सुझाव –

वैश्वीकरण की सफलता के लिए कुछ आवश्यक शर्ते है। सबसे पहले जो कुछ भ्रान्तियां है उनका निराकरण हो आम जनता से लेकर बुद्धिजीवी तक फिर सुधारों के प्रति सरकार भी वचनबद्धता की स्पष्ट एवं नियमित स्वीकारोक्ति भी आवश्यक है। जिससे सम्बद्ध व्यक्तियों या संस्थाओं में संशय की स्थिति पैदा न हो ओर जब आर्थिक सुधारों का दौर चल पडा है तो उसका संवेग बनाए रखना चाहिए। अन्यथा इसकी गति धीमी पडते ही आलोचकों को अवसर मिल जाएगा। सुधारों का विस्तार एवं प्रभाव सर्वव्यापी होना चाहिए। किसी क्षेत्र विशेष या वर्ग विशेष को इससे अधिक लाभ या नुकसान नही होना चाहिए। राष्ट्रनिर्माण में सबको अंशदान करना चाहिए।

सन्दर्भ :–

1. सिंधी व गोस्वामी समाजशास्त्र विवेचन राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2003.
2. जे.पी. सिंह ''समाजशास्त्र अवधारणाएँ एवं सिद्धान्त'' प्रेंटिश हाल ऑफ इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली, 2004.
3. गुप्ता व शर्मा 'समाजशास्त्र' साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा – 2001
4. Doshi S.L. and Jain P.C.: Samajshashtra ki nayi disayen(in Hindi) National Publication,2012.
5. Harlambos M.J.: Sociology – themes and perspectives, New Delhi, Oxford University press.1998.
6. Sharma K.L., Indian social structure and changes, Rawat Publication, 2007.